



How then can we  
preach and pray  
Trinity?

---

---

---

---

---

---

---

---



"If our creedal  
affirmations of the  
mystery of the Trinity are  
true, then they must be  
very true, affecting  
profoundly every  
dimension of our  
existence." (Hunt:4)

---

---

---

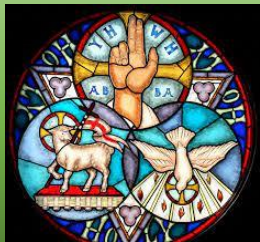
---

---

---

---

---



1. Preach  
monotheism over  
polytheism.

---

---

---

---

---

---

---

---



2. Preach radical monotheism (Richard Niebuhr) over rigid monotheism.

---

---

---

---

---

---

---

---



3. Preach responding to God as He reveals Himself, even as Mystery.

---

---

---

---

---

---

---

---



4. Preach distinction without division, autonomy in intimacy, individuality in community, *kenosis* & *koinonia*

---

---

---

---

---

---

---

---



Preach that in God's Oneness lies our hope of oneness, individually and corporately. Beware individuality and hierarchies.

---

---

---

---

---

---

---

---



5. Preach oneness is not sameness. Conformity is neither community nor maturity.

---

---

---

---

---

---

---

---



6. Preach submission in time is not subordination in essence or eternity. Because He serves we can too.

---

---

---

---

---

---

---

---



7. Out of Divine Diversity in Unity comes mission in creation and redemption.

---

---

---

---

---

---

---

---



8. In mission, the Divine Triad organizes Himself into voluntary, functional economy.

---

---

---

---

---

---

---

---